पाठ - 9
दावत का नया मर्कज़

الدرس التاسع - هندي
مقر الدعوة الجديد

मदीना हक़ और हक़ वालों के लिए एक महफ़ूज़ पनाहगाह बन गया। अतएव उसकी तरफ़ मुसलमानों की हिजरत का सिलसिला शुरु हो गया, अलबत्ता कुरैशियों ने मुसलमानों को हिजरत से रोकने का इरादा पक्का कर लिया। इसकी वजह से कुछ मुहाजिरों को बड़े कठिन हालात व जुल्म व अत्याचार का सामना करना पड़ा। यही वजह है कि मुसलमान कुरैश से छुप कर हिजरत किया करते थे। अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु भी हिजरत की इजाज़त मांगा करते थे मगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कहतेः "जल्दी न मचाओ, शायद अल्लाह तुम्हारा कोई साथी बना दे। यहां तक कि बहुत से मुसलमान हिजरत कर गए।

कुरैश ने मुसलमानों की हिजरत और मदीना में जमा होने को देखा तो उनका पागल पन हद से ज़्यादा बढ़ गया और उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी दावत के ग़ालिब होने का डर सताने लगा। अतः उन्होंने इस बारे में आपस में सलाह व मश्वरा किया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने पर सहमत हो गए। अबू जहल ने कहाः "मेरा विचार है कि हम अपने–अपने खानदान में से एक एक ताक़तवर नवजवान को तलवार थमाएं। वे लोग मिल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरें और एक साथ टूट पड़ें, इस तरह से उनका खून पूरे क़बाइल में तक़सीम हो जाएगा और बनू बनु हाशिम सभी लोगों से दुश्मनी की हिम्मत नहीं कर पाएंगे। इधर अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस साजिश से आगाह कर दिया तो अल्लाह से इजाज़त मिलने के बाद अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से हिजरत के बारे में मश्वरा किया और रात में अली रजियल्लाहु अन्हु से कहा कि वे आप की जगह सो जाएं ताकि लोगों को एहसास हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर ही में हैं।

साज़िशी लोग आए और उन्होंने घर को चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु को बिस्तर पर देखा तो समझा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अतएव वे लोग आपके निकलने का इन्तिज़ार करने लगे ताकि वे घात लगा कर हमला करें और आपको क़त्ल कर दें। इस दौरान रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच से निकले। वे लोग घर को चारों ओर से घेरे हुए थे आपने उनके सरों पर मिट्टी डाली जिससे अल्लाह ने उनकी आँखों की रौशनी खत्म कर दी और उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाहर निकलने का पता ही न लग सका। आप अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु के पास गए और दोनों एक साथ मदीना की तरफ़ निकल पड़े और ग़ारे सौर में छुप गए।

कुरैश के नवजवान आपका इन्तिज़ार करते रहे यहां तक कि सुबह हो गयी। सुबह हुई तो अली रजियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर से उठे तो वह अपने हाथ मलते रह गए। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में मालूम किया लेकिन उन्होंने आपके बारे में कुछ नहीं बताया जिस पर उन लोगों ने आपको मारा पीटा मगर इससे कुछ हासिल नहीं हुआ। इसके बाद कुरैश ने आपकी तलाश में हर ओर लोगों को भेजा और ज़िन्दा या मुर्दा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाने वाले के लिए सौ ऊंटों का इनाम रखा। तलाश करने वाले ग़ार के मुंह तक पहुंच गए जिस में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथी अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु छुपे हुए थे यहां तक कि यदि उनमें से कोई अपने पांव के नीचे देखता तो वह आप दोनों को देख लेता, जिसे देख कर अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अत्यन्त दुखी हो गए। इस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहाः "अबु बक्र इन दो लागों के बारे में तुम क्यों परेशान हो रहे हो जिनके साथ तीसरा अल्लाह है। ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है

कुरैश के लोगों ने आप दोनों को नहीं देखा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के दोस्त ग़ार में तीन दिन तक ठहरे, फिर मदीना के लिए चल दिए। रास्ता बहुत लम्बा था और धूप बहुत तेज़ थी। दूसरे दिन की शाम में आप दोनों का गुज़र उम्मे माअबद नामी एक महिला के खेमे से हुआ। आप दोनों ने उनसे खाना पानी मांगा, लेकिन इन्हें उनके पास कुछ नहीं मिला, अलबत्ता एक कमज़ोर बकरी थी जो चलने की तकलीफ़ की वजह से चरागाह नहीं जा सकी थी। उसके थनों में दूध की एक बूंद का भी नामो निशान नहीं था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बकरी के पास गए और उसके थन पर हाथ फेरा अतएव दूध का फ़व्वारा बहने लगा। आपने उस बकरी को दुहा और एक बड़ा बर्तन भरा। यह देखकर उम्मे माअबद हैरान व परेशान हो गयीं। आप दोनों ने उसे पिया यहां तक कि पेट भर गया। फिर दूसरी बार बकरी को दुहा और बर्तन भर जाने के बाद उसे उम्मे माअबद के पास छोड़ दिया और अपना सफ़र जारी रखा।

उधर मदीना वाले रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहुंचने का मदीना से बाहर निकल कर रोज़ाना इन्तिज़ार करते थे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना पहुंच गए तो वह लोग आपके पास आए और आपको खुश आमदीद कहा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना के क़रीब कुबा नाम की जगह पर क़याम किया और चार दिन तक ठहरे इसी मुद्दत में आपने एक मस्जिद की बुनियाद डाली। वह मस्जिद कुबा इस्लाम में तामीर की जाने वाली सबसे पहली मस्जिद है। पांचवें दिन आप मदीना की ओर चल पड़े। बहुत सारे अन्सारी सहाबा की इच्छा थी कि वे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत से सरफ़राज़ हों और उन्हें आपकी मेहमान नवाज़ी का गौरव प्राप्त हो। अतएव वे ऊंटनी की लगाम पकड़ लेते थे जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनका शुक्रिया अदा करते और कहतेः "इसे छोड़ दो क्योंकि यह अल्लाह की ओर से काम पर है। ऊंटनी जब उस मक़ाम पर पहुंची जहां अल्लाह ने उसे ठहरने का हुक्म दिया था तो वह बैठ गयी। आप उससे नहीं उतरे, ऊंटनी उठी और कुछ दूर फिर चली, फिर मुड़ी और वापस आ गयी और पहली जगह रुक गयी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बार ऊंटनी से उतर गए। यही मस्जिदे नबवी की जगह थी और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू अय्यूब अन्सारी रजियल्लाहु अन्हु के यहां क़याम किया।